वि॰ २ तनामास्यात्पेरिड न्यं भेश्रजीविका। पाषर् हिनो खिन्न गरं यिति वे खुनं ॥ २८ ॥ अभावाद हुनात्या गस्तर् ग ब ह्या पर्यका । मुख घर्या इत कहाना गवी रस्तर हुनात्या गस्तर ग ब ह्या पर्यका । मुख घर्या कि स्मेक्स ग्रहः । वाधुक्य ऋ विवाहे स्थान् कहानिः पूग पृष्यका ॥ ३०॥ व ह्यो के तिरास सम्भास्तर तं त्व भिमानितं । धिवतं संप्रयोगानार त ऋ ब ह्या पर्यक्षे ॥ ३०॥ व ह्या के तिरास सम्भास्तर तं त्व भिमानितं । धिवतं संप्रयोगानार त ऋ ब ह्या पर्यक्षे ॥ ३०॥ अपस्थित सम्भास्त विवाह स्थान् के तिरास सम्भास्त विवाह स्थान के तिरास सम्भास समा सम्भास समा सम्भास सम्भ

ठामार्गिन में महाना। इतिब्रह्मवर्गः॥ समान मान मिन्न

द्वा दिजलिङ्गीन्यः श्व चः श्व वियोऽ यप्रजेश्वरः । राजाधियाम ग्रह लेश् स्व जन्माभयाप चः ॥ १॥ स्व न्धावारः स्थान्व टवः शिवर नृव स्व स्थितिः । आदिराजः पृष्ठेविरयः वा कुन्स्य स्वपुर स्वयः ॥ २॥ ये। वना श्व का ग्रह जिन् ॥ ३॥ मेथिली जा न वी सी ता विदे ही भू मिजा चसा । राम प्रचे। कुश् स्ववि के यो त्या कुशी स्वते ॥ ४॥ से। मिचिल श्वम यो। मेधना दिज च्चा य व गः । राश्च सेन्द्रोट श मुखे सङ्के शोधनदानु जः ॥ ५॥ मन्द्रोट री शः पे। स्व सेन्द्रोट श मुखे सङ्के शोधनदानु जः ॥ ५॥ मन्द्रोट री शः पे। स्व सेन्द्रोट श मुखे सङ्के शोधनदानु जः ॥ ५॥ मन्द्रोट री शः पे। स्व स्वेग मेधनाद स्व श क्र जित् । इन्मान् सुमाना स्व ने योयोग चर्गनिली ॥ ६॥ हिडिम्बा रग्गो। रामद् तस्व वार्ज्जन स्व जः । सेन्द्र स्व वालीवा लिस् स्व ग्रीवार विन दनः ॥ ७॥ स्वः पुरु रवा वि श्रि